रात्रि क्लास 5-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

सभी किस विचार में बैठे हैं। कौन आवेंगा? बाप दादा। समझते हैं स्वर्ग का वर्सा मिलना है बापदादा से। बाकी बात रही स्वर्ग में क्या बनेंगे? यह भी समझते हैं सत्य नारायण की कथा है। नर से नारायण बनने का है ना। आये ही हैं विश्व की बादशाही लेने। यह तो ज्ञान पहले से ही तुम बच्चों में है। बाप आकर समझाते हैं बिलकुल सहज बात। आत्मा तमोप्रधान बनी है। सतयुग में सतोप्रधान थी। कलियुग में है तमोप्रधान। अभी सतोप्रधान बनाने लिए बाप आये हैं। कहते हैं मुझे याद करो। मैं सर्व-शक्तिवान हूं। मुझे याद करने से ही सतोप्रधान बन जावेंगे। मित्र-सम्बन्धियों को समझा तो सकते हैं ना। बाप ने गीता सुनाई थी। अभी मनुष्य सुनाते हैं। बहुत फर्क हो गया। भगवान तो भगवान ही है। मनुष्य फिर देवता कैसे बनावेंगे। नई सृष्टि में हैं ही देवतायें। तो मुख्य है बाप का परिचय। बेहद का बाप है ही नई दुनिया का वर्सा देने वाला। बाप को याद करते रहे तो अन्त मते सो गति हो जावेंगी। पति से तो बाबा को याद करना अच्छा है ना। पति को याद करने से विकार याद आ जाता है। बाप को याद करने से तो विकार की बात नहीं उठती। यह भी समझना चाहिए। तुम बच्चों को मालूम है बाप आते ही हैं संगम युग पर पुरुषोत्तम बनाने लिए। बच्चे जानते हैं अभी हमारा 84 का चक्र पूरा होता है। फिर पहले से शुरू होगा। यह भी खुशी होनी चाहिए। तब ही बाबा कहते हैं बाप और वर्से को याद करो। परन्तु ऐसे तमोप्रधान बन गये हैं जो दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं। प्रदर्शनी में अथवा म्युजियम में जब आते हैं तो उनको बाप के सामने खड़ा करना चाहिए बाप कहते हैं मुझे याद करनेसे तुम यह बन जावेंगे। यह समझाना तो बहुत सहज है। यह है गाड-फादर। उनको याद करना। तुम फादर के लिए कहते हो कुत्ते-बिल्ले आद सभी में है। लज्जा नहीं आती है। फादर से वर्सा ही सतयुग का मिलता है। भारत सतयुग था। अभी है पिछाड़ी। फिर बाप को याद करो। बाप और बादशाही को याद करो। उठते-बैठते, चलते, फिरते बाबा और बादशाही। तो अन्त मते सो गति हो जावेंगी। यह है सच्चा बाप। उनके बच्चे बने हो तो सच्च-खण्ड के मालिक बन जावेंगे। इतनी सहज बात भी क्यों नहीं समझते हैं। या तो ठोक2 कर अलफ नहीं पक्का करते हैं। अनुभवी तो तुम बच्चे ही हो समझाना तुम्हारा काम है। यह तो बुर्जुग है। कुछ भी कह देंगे। बाप को तुम याद नहीं कर सकते हो। अलफ को भूलने से तुम बे भी भूल जाते हो। अलफ बाबा, बे बादशाही। बस। बाबा को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। और स्वर्ग में चले जावेंगे। कितना सहज है। जन्म-जन्मान्तर तो भक्ति की बातें सुनते2 माया का ताला एकदम लग गया है। बाप ही आकर चाबी से ताला खोलते हैं। नहीं तो सभी के कान बन्द है। पत्थर बुद्धि हैं।

बाप कहते हैं मीठे बच्चों यह वेद-शास्त्र आद कोई धर्म-शास्त्र नहीं है। धर्म-शास्त्र है ही गीता। एक कुल और दो डिनायस्टी सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी स्थापन होती है। ब्राह्मणों का है संगमयुगी कुल। बहुत पदमभाग्यशाली है। और फिर भ्रष्ट सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी। पहले कुल स्थापन करते हैं। जब बहुत हो जाते हैं तब डिनायस्टी होती है। यह तो कुल स्थापन कर फट से डिनायस्टी स्थापन हो जाती है। अच्छा अलफ को बेठ याद करो। यह भी तुम लिखते हो शिव बाबा को याद करो। शिव बाबा याद है? इसके नीचे लिखो स्वर्ग की बादशाही याद है? बादशाही याद करनेसे तो मुख मीठा होगा ना। तुम्हारा जाने से खीसा भी भरपूर रहता है। तो बाप को भी याद करना है। वर्से को भी याद करना है। बाप तो सर्वेन्ट है। कहते हैं तुम्हारा उपकार करता हूं। तुम तो अपना अपकार ही करते आये हो। यह भी ड्रामा में नूंध है। किसका दोष नहीं है। सम्पूर्ण तो कोई बना नहीं है यह भी अमूल नहीं है। अमूल एक ही बाप है। यह भी बच्चों को समझाते रहते हैं। ट्रस्टी होकर रहो। बाप को देते हो फिर बाप फिर तुमको देते हैं। कहते हैं ट्रस्टी हो रहो। खर्चा भी करते रहो। कुछ संकल्प आये तो बाप से पूछते रहो। और कोई तकलीफ नहीं है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।